रक्षा बंधन में शामिल क्षेत्रिय मुख्य वन संरक्षक एल. एन. दमौर, कौशल, मुखिया

अधिक जानकारी कि लिए कृपया सम्पर्क किजिए

अध्यापक डॉ. आशिस मजुमदार

संयोजक

क्षेत्रीय केंद्र, राष्ट्रीय वनीकरण एवं ईको विकास बोर्ड (एन ए ई बी)

(पर्यावरण एवं वन मत्रांलय, भारत सरकार)

यादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता - 700 032

दूरभाष : (033) 2414 - 6979

फ्याक्स : (033) 2414 - 6886

इ-मेल : asismazumdar@yahoo.com

हमे जानिए : http://www.rc-naeb-ju.org

© copyright RC NAEB, JU

हरियाली

सुखा क्षेत्र को हरियाली में रूपांतर के लिए श्री कौशल किशोर जायसवाल का एक क्रांति

श्री कौशल किशोर जायसवाल, पर्यावरणविद्
पर्यावरण धर्म एवं बनराखी मूवमेन्ट के प्रणेता

क्षेत्रीय केंद्र
राष्ट्रीय वनीकरण एवं ईको विकास बोर्ड
पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार
यादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता 700 032

चारों ओर जहाँ लोग फायदे के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई कर रहे है, एक व्यक्ति ने भविष्य के बारे में सोचते हुए इसका एक निदान किया। आइये जानते हैं कि किस प्रकार पर्यावरण को बचाने के लिए वे लड़े एवं आम आदमी को भी इसमें शामिल किया। उनके इसी सोच के कारण उनका नाम आई. पी. भी. एम. पुरस्कार के लिए भी अनुशंसित किया गया है।

1966 में महा अकाल पड़ा तो उस समय श्री जायसवाल 10 वर्ष के थे उनके पिता श्री मोहन लाल खुर्जा कुछ ग्रामिणों के जंगल कटने से यह भयावह अकाल पड़ा है कि चर्चा कर रहे थे कि श्री जायसवाल ने ध्यान से सुना और ठान लिया कि जंगल बचाना है पौधा लगाना है जिससे दुबारा ऐसी भयावह अकाल न पड़े। क्योंकि उस समय अन्न तो था ही नहीं, पेड़ों के पत्ते एवं घास की रोटीयाँ खाकर जीवन बचाया गया था। श्री जायसवाल ने पहली बार अपने पूर्वजों के भूमि पर 1967 में पौधा लगाये और प्रत्येक वर्ष अन्य किसानों को प्रेरित कर पौधा लगाना एवं वनों को बचाने का शुरूआत किया था।

झारखण्ड, पलामू जिला के पंचायत – डाली के कौशल जी ने एक रणनीति बनाई कि कैसे वे अपने साधनों का इस्तेमाल कर के, वृक्षरोपण कर सकते थे; वन बना सकते थे। बचपन से ही प्रकृति– प्रेमी होने के कारण वे इस वायुमंडल में पेड़ों के महत्व के बारे में भली–भाँति वाकिफ थे।

गढ़वा जिले में शिविर लगाकर पौधा वितरण करते कौशल व अन्य

मध्य प्रदेश के सिंगरौली जिले के माड़ा में शिविर क आयोजन

1957 के जन्में वे, छोटी उम्र से ही छोटे छोटे पौधें खरीदते और उसे अपने पुरखों की बंजर ज़मीन पर लगाते। ज़मीन के चारों ओर एक नाला खोदते जिससे की पानी टिका रहे और धीरे–धीरे वह लहलहाते मिश्रित वन बनने लगे।

अपने पारिवारिक व्यवसाय के साथ जुड़े होने के बावजूद भी, उन्होंने वृक्षरोपन के नेक काम में जन साधारण को शामिल करने के बारे में सोचा। और वे छोटे पौधों, बैनरों एवं कुछ लोगों के साथ निकल पड़े। वे गाँवों में गए और पेड़, जल, जंगल, जमीन, प्रकृति व प्रदुषण एवं वनों पर रक्षा बंधन कार्यक्रम का अभियान चलाया एवं किस प्रकार एक वृक्ष एक साधारण गरीब किसान का सहारा बन सकता है यह सब बातें गाँववालों को समझाईं। वह पेड़ गरीब लोगों की पूँजी बनेंगे, यहाँ तक की आगे चल कर बुढ़ापे का सहारा भी बन सकते हैं। लोग उनकी बातें सुनकर प्रभावित हुए और पौधों को अपने आँगन में विशेष स्थान दिया। उन्होंने पर्यावरण धर्म के तहत बनराखी मूवमेन्ट में लोगों को बताये कि वृक्ष व शिव एक समान पिते विष करते कल्याण। उन्होंने वनों को भगवान शिव से तुलना की। इनके कार्यों की प्रशंसा श्री सुन्दर लाल बहुगुना, डॉ० जॉर्ज ए जेम्स रिसर्च सेन्टर अमेरिका एवं नेपाल के श्री सरोज शर्मा ने भी की है।

श्री जायसवाल यह शिविर गाँव के बड़े बाजार में भी आयोजित करते ताकि ज्यादा–से–ज्यादा लोग उनतक पहुँच पाएँ और लोगों को शिविर में आने के लिए अलग से वक्त न ज़ाया करना पड़े। हर शिविर में 10,000 से 15,000 पौधे बिलकुल मुफ्त में बाँटा करते। वर्ष 2012 तक उन्होंने 17,15,666 पौधों का वितरण और रोपण का कार्य सफलता पुर्वक किया। येह जानकर हर्ष होता हे की इस संख्या में प्रत्येक वर्ष लगभग एक लाख पेड़ो का इजाफा हो रहा हे।

वनों को कटने से बचाने के लिए उन्होंने 1976 में पर्यावरण धर्म चलाया इसी के तहत वनराखी मूवमेन्ट चलाया व लोगों को सलाह दी कि पेड़ों को राखी बाँधें, पेड़ों को भाई बनाए, अपने परिवार का सदस्य माने। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई को रोकने के लिए उन्होंने यह उपाय सुझाया क्योंकि कोई भी व्यक्ति अपने भाई को कटने नहीं देगा। पेड़ और मनुष्य के इस भातृत्व बंधन से एवं बाँटे गए पौधों के 95 प्रतिशत के टिक जाने की बदौलत पलामू प्रमण्डल आज हरा–भरा दिखता है।

उनके इस पुनित कार्य में पत्नी पूनम जायसवाल, पुत्र अरूप, अमित व पुत्री ज्योति, माँ पार्वती देवी, पिता मोहन लाल खुर्जा का अहम योगदान रहा है।

पलामू में रक्षा बंधन करते कौशल एवं पत्नी पूनम जायसवाल व अन्य

उन्होंने निजी खर्च से झारखण्ड के पलामू, गढ़वा, लातेहार, चतरा, लोहरदगा, गुमला, सिमडेगा, जमशेदपुर, धनवाद एवं राँची, कर्नाटक के उत्तर कन्नड़, मध्य प्रदेश के सिंगरौली, उत्तर प्रदेश के सोनभद्र, छततीसगढ़ के सरगुजा, बिहार के गया, पटना, भुटान तथा नेपाल के काठमाण्डू जिलों में भी शिविरों का आयोजन किया। पेड़ लगाने के अलावा उन्होंने पलामू में बहुत सारे नाले और बांध बनवाए जिसके कारण उस इलाके के नमी की मात्रा एवं भूगर्भ–जलस्तर को काफी हद तक बढ़ाया जा सका।

2008 में प्रधान मुख्य वन संरक्षक (ए.के. सिंह, आर.के. जुल्शी, सी.आर. सहाय) व उप सचिव अवार्ड मिलने के उपरान्त

स्वीकृति के नाम पर उन्हें अबतक झारखण्ड सरकार ने मान–पत्र और नगद 11,000 रूपये प्रदान किये हैं। इसके अलावा पलामू के डिप्टी कलेक्टर ने उनके काम की सराहना की और कई पुरस्कारों के लिए उनके नाम की सिफारिश भी की है। झारखण्ड के मुख्य वन संरक्षक ने भी आई. पी. भी. एम. पुरस्कार के लिए उनका नाम सुझाया है।

श्री जायसवाल ने 1976 में पलामू के सैंकड़ों किसानों की बंजर भूमि पर पौधा लगाये, उस समय किसान बाहरी पौधा लगाने से डरते थे कि सरकार हमलोगों की भूमि लेलेगी। परन्तु आज श्री जायसवाल ने पौधा लगाने पर इतनी क्रांन्ति पैदा की है कि किसान शिविर में पौधा लेने को ललायित रहते हैं। जिसका उदाहरण सुखाड़ पलामू क्षेत्र को आज हरियाली के रूप में देखने योग्य है। श्री जायसवाल ने लोगों को बताया की वनों की सुरक्षा लाठी से नहीं राखी से होगी। सोचो साथ क्या ले जायेंगे सात पौधा लगायेंगे सात पीढ़ी तक जायेंगे। प्रकृति की सुन्दरता की रक्षा करें आने वाली पीढ़ी को स्वच्छ वातावरण दें। इन्हीं कार्यों से हम तीसरा विश्वयुद्ध जल संकट को टाल सकते हैं।

उन्होंने चन्दन, शीशम, सागवान, गम्हार जैसे महंगी लकड़ी वाले पौधे बाँटे, जो पूँजी बनेंगे एवं आम, अमरूद, कटहल, निबूँ, अनार, मुनगा, पपिता ऐसे फलदार पौधे बाँटे जो रोज़ की कमाई में बढ़ोत्तरी लाँएगें।

अब श्री जायसवाल पूरे भारत में परिक्रमण करते हैं; इसके अलावा नेपाल और भूटान में भी शिविरों का आयोजन करते है; यह देखकर बड़ी खुशी होती हे कि लोग बड़े पैमाने में आग्रह दिखला रहे हैं। श्री जायसवाल जी ने विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान, पानी पंचायत, वृद्धा आश्रम, लावारिस सेवा केन्द्र जैसी कुछ संस्थाओं की स्थापना भी की है। इस संस्था का उद्घाटन श्री सुन्दर लाल बहुगुना ने की है जो गरीब किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करता है।
श्री जायसवाल जी ने सारा काम, यानी मेहनत और लगन के अलावा, प्रत्येक वर्ष खुद के लगभग 3 लाख रूपये इस काम पर खर्च करते हैं।

उनके बारे में राईटर बैरी ओ ब्रायेन नील ओ बरेन, अंजना शांह, उर्मिला रॉय ने C.B.S.E पुस्तक न्यू फाइन्ड आउट कक्षा 8 एवं I.C.S.E बोर्ड के कक्षा 6 ट्रेजर चेस्ट चैस्टर झारखण्ड मैन ऑन मिशन कौशल किशोर जायसवाल के नाम से कई वर्षो से पढ़ाई की जाती है।
श्री कौशल किशोर जायसवाल का काम, जो उन्होंने अपने स्वार्थ की परवाह न करते हुए की है, तरीफ का हकदार है।

झारखण्ड में कौशल के प्रेरणा स्वरूप रक्षा बंधन करती छात्राऐं

पलामू में पौधा रोपन करते कौशल व अन्य

उत्तर प्रदेश में पौधा रोपन करते कौशल व अन्य

शिविर का उद्घाटन करते क्षेत्रीय मुख्य वन संरक्षक रवींद्र कुमार, श्री सुन्दर लाल बहुगुना व कौशल

छत्तीसगढ़ में कौशल के प्रेरणा स्वरूप रक्षा बंधन

कौशल को सम्मानित करते राज्यपाल

उप मुख्यमंत्री झारखण्ड 2008

झारखण्ड विधान सभा अध्यक्ष 2012

कर्णाटक में क्षेत्रिय मुख्य वन संरक्षक 2008